प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

सलंग अंक १०३ नवम्बर-२०१५ मासिक

प.पू. आचार्य महाराजश्री की ४३ वीं जन्म जयंती चराडवा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮
શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ.મોટા મહારાજ
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ.લાલજી મહારાજ ૧૦૮
શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

His Holiness Acharya Maharaj
Shri Koshalendraprasadji Pande

આપણને સર્વાવતારી સર્વોપરિ
અનંત કોટિ બ્રહ્માંડના અધિપતિ ભગવાન
શ્રી સ્વામિનારાયણભગવાનની પ્રાપ્તિ થઈ છે
તેનો યથાર્થ મહાત્મ્યજ્ઞાને સહિત મહિમા
સમજ્યા વગરની જો ત્યાગ કરી જાય તો
મોક્ષમાર્ગમાં અવરોધો આવે

માટે આવો આ દિપાવલીના પરમ
પાવન મંગળ પર્વ પ્રસંગે આપણે શ્રી હરિને
એજ પ્રાર્થના કરીએ કે તમે જેવા છો તેવા
ઓળખવામાં અજ્ઞાન બાધક ન રહે
તેમજ તમે તમારું સ્વરૂપ એવા પધરાવેલ
શ્રી નરનારાયણ દેવથી આપણે જરા પણ જુદા
ન થવાય

આપ સૌને અમારા શ્રી નરનારાયણદેવના
સાન્નિધ્યમાં [illegible] હૃદયપૂર્વક નૂતનવર્ષાભિનંદન
અને દિપાવલીની શુભકામનાઓ સહિત
શુભાશીર્વાદ.

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮
શ્રીકોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. લાલજી મહારાજ
શ્રી ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

Shree Swaminarayan Mandir, Ahmedabad-1
Tel: 079 2212 3835

Shree Swaminarayan Bagh,
Ahmedabad-52
Tel: 079 2747 8070

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ९ ● अंक : १०३

नवम्बर-२०१५

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	पांच देवों की पूजा करनी चाहिए	०६
०४.	दिपावली के नूतन वर्ष के अवसर पर सद्गुरुओं की स्तुति द्वारा श्रीहरि के स्वरुप का सर्वोपरिज्ञान	०८
०५.	कल्याण की प्रोमीसरी नोट	१०
०६.	प.पू. महाराजश्रीना मुखेथी आशीर्वचन	११
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०८.	सत्संग बालवाटिका	१६
०९.	भक्ति सुधा	१८
१०.	सत्संग समाचार	२२

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९१२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण मासिक के वाचक सभी सज्जनो को तथा लेखकों को तथा इस मासिक अंक से सम्बन्धरखने वाले सभी प्रिय भक्तों को नूतन वर्ष का हार्दिक जयश्री स्वामिनारायण।

यह नूतन वर्ष आप सभी को सुखकारक, आरोग्यप्रद रहे तथा आप लोग उन्नति के मार्ग पर निरन्तर बढते रहें, इसके साथ ही परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा दृढ हो, तथा नियम, निश्चय, पक्ष मस्तक पर रहे एवं श्रीहरि के दिव्यकुल ऐसे धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के प्रति निष्ठा, आत्मीयता में विशेष वृद्धि होती रहे ऐसी श्री नरनारायणदेव परम कृपालु परमात्मा के चरणों में प्रार्थना।

श्री स्वामिनारायण मासिक करीब साढे चार दशक से अविरत आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करके केवल सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की लीला चरित्र, महिमा के साथ लेखन समाग्री प्रस्तुत करके आप सभी की सर्वोपरी उपासना दृढ हो रही है। प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा से संत-हरिभक्त मासिक अंक की प्रगति के लिये निरन्तर प्रयास करते रहते हैं। इन सभी को तथा लेखन सामग्री को समय से प्रस्तुत करने वाले सभी लेखकों कों खूब-खूब अभिनंदन।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूबर-२०१५)

४	हिंमतनगर, गढेडा तथा खेड़ आदि गाँवो में पदार्पण।
७ से २०	विदेश धर्मयात्रा, शिकागो, ज्योर्जिया (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर पदार्पण तथा केनेडा - आई.एस.एस.ओ. संस्थापित नूतन एडमिन्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण
२३	चराडवा (मूली देश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में ४३ वाँ प्रागट्योत्सव संत-हरिभक्तों ने धूमधाम से मनाया।
२५	श्री स्वामिनारायण मंदिर लींमडी मुवाडा (पंच महाल) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
२६	श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिपर (मूली देश) में खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण।
२७	श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली वासणा महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।
२८	भाट गाँव में प.भ. घनश्यामभाई पटेल के यहाँ पदार्पण। सोजा गाँव में महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।
२९	श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

पांच देवों की पूजा करनी चाहिए

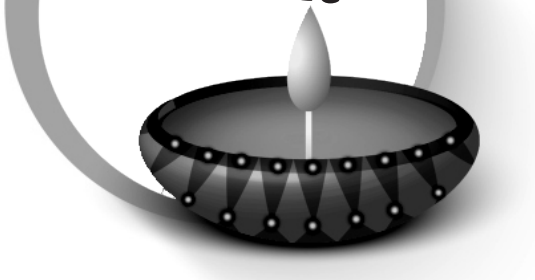

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

भगवान श्री सहजानंद स्वामीने शिक्षापत्री के ८४ वें श्लोक में निजाश्रितों के लिये आज्ञा किये है कि – विष्णु, शिव, गणपति, पार्वती, सूर्य इन पांच देवों को मानना तथा इनकी पूजा करना । शिक्षापत्री भाष्य में शतानंद स्वामी विवेचन करते हुए लिखते हैं कि विष्णु जिन्हे पद्मनाभ अथवा नारायण कहा गया है जो पुरुषोत्तम के आद्य अवतार होने से पूज्य हैं । शिवजी सर्व धर्म के पवर्तक होने से पूज्य हैं । गणपतिजी के विषय में ब्रह्म वैवर्त पुराण के गणपति खंड में श्रीकृष्ण के अंशावतार के रुप में कहा गया है तथा सर्व देवों में प्रथम पूज्य के रूप में होने से पूज्य हैं । प्रेम स्वरुपा पार्वतीजी शिवजी की अर्धांगना होने से पूज्य हैं । श्रीकृष्ण (इष्टदेव की) प्राप्ति कराने में सहायक होने से पूज्य हैं । भागवत में लिखा गया है कि व्रज में गोपियां तथा कुंदनपुर में ऋक्मणीजी अपने इष्टदेव की प्राप्ति के लिये पार्वती देवी की पूजा की थी । सूर्यदेव द्विजाति प्राप्त कराने वाली गायत्री मंत्र के अधिष्ठाता होने से भगवान के स्वरुप हैं । सूर्य वेदमूर्ति तथा धर्म की प्रवृत्ति के मूल हैं इस लिये भी पूज्य हैं । स्वामी लिखते हैं कि पांच देवो के पूजन करने से अन्य देवों के पूजन की संका नहीं करनी चाहिए । इसलिये वैष्णवलोग विष्णु को प्रधान मानकर पांच देवो की पूजा करनी चाहिए । इशान कोण में शिवजीकी, अग्नि कोण में गणपतिजी को, नैऋत्य कोण में सूर्य देव को, वायव्य कोण में पार्वतीजी को रखकर पूजा करनी चाहिए । देवी उपासक देवी को प्रधान मान जो जिसके उपासक हो, उन्हें प्रधान माने । पांच देवों की पूजा में सभी देवों की पूजा आजाती है । वेद पुराण में पांच देवों को प्रधान बताया गया है । इसका अनेकों कारण शास्त्रो में बताया गया है । पांच देवो को पांच तत्व बताया गया है । पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश इन पांच तत्वों से युक्त, यह अपना शरीर है । पांच तत्वों की पूजा अवश्य करनी चाहिए । पांच तत्वों के अधिष्ठाता पांच देव हैं । आकाश के अधिष्ठाता भगवान विष्णु हैं । वायु तत्व के अधिष्ठाता सूर्यनारायण देव हैं । अग्नितत्व की अधिष्ठाता जगदम्बा पार्वती देवी है । जल तत्व के अधिष्ठाता गजानन गणेशजी महाराज हैं । पृथ्वी तत्व के अधिष्ठाता भोलानाथ भगवान सदा शिव हैं ।

ब्रह्मांड में तथा शरीर में पांच तत्वो के न्यूनाधिक प्रमाण का पिण्ड बनाया गया है । इन तत्वो की स्थिति में बिगाड होने पर महा मारी जैसी बिमारी तथा ब्रह्मांड में प्रहलयकारक स्थिति होती है । इसलिये अपने पूर्वजऋषियों ने पांच देवों की तिथि, त्यौहार, उत्सव इत्यादि का दिन निश्चित किया है । जब–जब जिन जिन देवों के प्रभाव से ब्रह्मांड के वातावरण में परिवर्तन आता है तब–तब उन–उन देवों की आराधना करने की परंपरा चलाई है । भाद्र पक्ष में गणेशजी की आराधना, आश्विन मास में देवीजी की आराधना, श्रावण मास में शिवजीकी आराधना, प्रत्येक एकादशी को भगवान विष्णुकी आराधना, माघ मास में भगवान सूर्य की आराधना करनी चाहिए ।

पांच देवो की पूजा पांच संप्रदायों में (वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर, गाणपत्य के आश्रितों को उन्हीं का अनुसरण करने की आज्ञा की है । पाचं देवों के पूजन से अपने इष्टदेव का अपराधया अन्याश्रमय नहीं होता ।

ब्रह्मांड जिस तरह पांच तत्वो से निर्मित है । उसी तरह संसार भी तीन तत्व – (सत्व, रज, तम) तीन गुणों वाली माया का विस्तार है । जगत में भेद तथा ममत्व करनेवाली भगवान की माया में तीन गुण हैं अर्थात् त्रिगुणात्मिका माया कहा गया है । जिस तरह शुद्ध सत्वगुणी आकाश,

आयुर्वेद में उपरोक्त प्रकृति को तीन गुणों से जाना जाता है । वात-कफ-पित्त । जिस प्रकृति का जो होता है उस प्रकार के रोग से वह प्रभावित होता है। अपने शास्त्र कार पांच तत्व तथा तीन तत्व का आधार मानकर ही मनुष्य के आध्यात्मिक तथा शारीरिक समस्या के निराकरण हेतु देवों की पूजा तथा आराधना की प्रणालिका चलाये हैं । इसकी बहुत जरुरत है। यह एक प्रकार से औषधिके रुप में पूजा, आराधना, जप-होम, पुरश्चरण करने से लाभ प्रद होगा । हम सभी के हितार्थ अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने वैदिक परंपरा के पांच देवों के पूजा की आज्ञा की है । इष्टदेव की उपासना की सिद्धि के लिये पांच देवों की पूजा सहायक है। सत्संगिजीवन में लिखा गया है कि - भंकोडा गाँव के क्षत्रिय भक्तोंने नवरात्री के पर्व में श्रीजी महाराज से पूछा कि हमें कुलदेवी की पूजा करनी चाहिए या नहीं ? तब श्रीहरिने कहा कि सात्विक देवी - पार्वती, लक्ष्मी, राधा की पूजा करनी चाहिए। परंतु जिन देवियों से हिंसा होती हो उनकी पूजा नहीं करनी चाहिए।

सनातन हिन्दु धर्म में जितने भी देवी-देवता बताये गये हैं वे सभी पांच देवों के अवतार या अंश है। इस पांच देवों की पूजा से सभी की पूजा हो गई ऐसा समझना चाहिए।

इष्टदेव की उपासना का अधिक बल रखना चाहिए। इसके साथ इष्टदेव की आज्ञा का पालन भी करते रहना चाहिए । जो इष्टदेव की आज्ञानुसार पांच देवों की पूजा करने में सर्व मनोरथ सिद्धि का फल है । महाराज की आज्ञा में तर्क, बुद्धियानी चलाकी, अहं का भाव नहीं रखना चाहिए। मात्र वचन का पालन करने में श्रेय-प्रेय है।

सत्व-रज का संमिश्रण वायु, शुद्ध, रज-अग्नि, रज-तमसंमिश्रण जल। शुद्ध तम-पृथ्वी अर्थात् इसमें पृथ्वी-आकाश-अग्नि इन तीनों तत्वों का संमिश्रण बताया गया है। जो सत्व-रज तम का प्रतीक है। वायु तथा जल इन दो तत्वो के संमिश्रण से उत्पन्न हुआ है । सत्व तथा तम एक दूसरे के प्रतिकूल होने से अग्नि तथा जल इन दोनो का एक साथ रहना संभव नहीं है।

तीन गुण के रहस्यरुपी पांचतात्विक भेद बताया गया है। इस तरह मानव की शरीर में गुणों से रहित पांच भेद दिखाई देता है। इसी तरह प्रत्येक वस्तु यें पांच तत्वों के मिश्रण से बना है। उस में जिन-जिन तत्वों की प्रधानता हो वे - वे गुण स्वभाव से प्रभावित होते हैं। साधारण रुप से प्रत्येक शरीर तथा वस्तु तीन गुण तथा पांच तत्वो से बना है । परंतु जिस शरीर में तत्वों की मात्राअधिक हो तो उस व्यक्ति तथा वस्तु में स्वभाव उन तत्वों से प्रभावित दिखाई देता है। जिस व्यक्ति में आकाश गुण की अधिकता हो वह सत्वगुणी होता है। जिस में वायु तत्व की अधिकता हो वह सत्व तथा रज गुण प्रधान होता है। जिस में पृथ्वी तत्व की अधिकता होती है तामसी प्रकृति का होता है।

दिपावली के नूतन वर्ष के अवसर पर सद्‌गुरुओं की स्तुति द्वारा श्रीहरि के स्वरुप का सर्वोपरिज्ञान

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

भगवान के भक्तों के लिये दीपावली का पर्व अन्तःकरण में जो भी अन्धकार है, अज्ञान है, उसका-आत्मा-परमात्मा का यथार्थ ज्ञान द्वारा नाथ करके, ज्ञानरुपी दीपक प्रगट करके चारो तरफ प्रकाश फैलाने का पर्व है। सर्वावतारी श्रीहरिने आदरज गाँव में मुक्तानंद मुनि, नित्यानंद मुनि, ब्रह्मानंद मुनि, चैतन्यानंद मुनि इन चारो संतो को सद्‌गुरु का पद देकर उन्हें संमानित किया। जीवात्मा को सत्यज्ञान करासके इस हेतु से श्रीहरि अक्षरधाम के मुक्तो को साथ लेकर पृथ्वी पर पधारे थे। ऐसे मुक्त संत पुरुष जब अपने मुख से श्रीहिर की स्तुति करते थे वही संक्षिप्त रुप में यहाँ पर लेख में स्मरण करते हैं - जिससे अपने जीवन में श्रीहरि के स्वरुप का स्मरण करके ज्ञानरुपी दीपक को प्रज्वलित कर सकें। हिन्दु संस्कृति में धन तेरस से प्रारंभ करके भाद्र द्वितीया तक पांच दिन तक दीपावली का पर्व मनाया जाता है। आदरज में उपरोक्त चार सद्‌गुरुओंने आश्विन कृष्ण चतुर्थी को प्रातः काल की सभा में श्रीहरि की यह स्तुति की है जिसे सत्संगि भूषण के चतुर्थ अंश के २२ वें अध्याय में विस्तारपूर्वक स.गु. ब्र. वासुदेवानंद वर्णी ने वर्णन किया है। सद्‌गुरु लोग कहते है कि हे सर्वेश्वर श्रीहरि ? आप अपने भक्तों के अमंगल का नाश करते हैं। हमारे तीनों प्रकार के ताप को दूर करने वाले है। आप रंक को महान बनाते है। बड़े को रंक बनाते हैं।

आकाश में विना आधार के जल रखते हैं। हे कृपानाथ ? हमारे लिये आप ही सभी कारणों के कारण श्रेष्ठ देव आप ही हैं। हे श्रीहरि। जगत की माता लक्ष्मीजी आपके चरण को अपने वक्षः स्थल में लेकर सेवन करती है। ऐसे हे प्रभु ! आप हमारे हृदय में नित्य निवास करो।

हे वासुदेव श्रीहरि ! आप ही सर्वेश्वर सर्वावतारी है। गर्व रहित हैं। त्रिकाल को जानने वाले हैं। काल के काल महाकाल के नियंता है। जीव, माया तथा पुरुष के स्वामी है। आप त्रिगुणातीत है। आप दिव्य अक्षरधाम में सदा विराजमान रहते है। जिन्हे प्राप्त करने के लिये मुनिलोग ब्रह्मचर्य का पालन करते है वे आप ही हैं। श्रीहरि ? आपके सामर्थ्य से यह पृथ्वी सर्वभूत प्राणी मात्र के भार को धारण करती है। काल से नष्ट एकांतिक धर्म का आप ही स्थापन करते हैं। ऐसे हे प्रभु ! आप की जय हो।

जिन महापुरुष को वेदादिक शास्त्र परमात्मा कहते हैं, ईश्वरावतार कहते है, मुक्त पुरुष कहते है, माया से अलिप्त कहते हैं, ब्रह्मस्व रुप कहते है ऐसा महापुरुषो भी ऐश्वर्य शक्ति तथा सामर्थ्य देने वाले आप ही है। इसी लिये प्रलय के अन्त में अपनी पत्नी मूलमाया द्वारा प्रकृति पुरुष की अनंत कोटि की सर्जना करती हैं। मूलमाया के पति महापुरुष को भी फल प्रदान करनेवाले आप ही हैं। हे अक्षरेश ! आप कामादिक अन्तः शत्रुओं को पराजित करने वाले हैं। देवो तथा दावन के आदर प्राप्त है। ब्राह्मणो के पूज्य है। आप अपने भक्तों के दोष का नाश करने वाले हैं। वेदमार्ग के आप प्रवर्तक हैं। हे भक्तिनंदन ! आप अपरिमित सामर्थ्यवाले तथा उत्तम कीर्तिवाले हैं। जिसके दाहिने हाथ में सर्वोत्तम मुक्ति है तथा प्रलय के समय जीवों के शुभ अशुभ कर्मो के रक्षक है। ऐसे हे

धर्मपुत्र ! हम आपको नमस्कार करते हैं।

नाम-रुपवाला त्रिगुणात्मक यह विश्वमिथ्या है फिर भी आपकी माया के कारण सत्य दिखाई देता है। ऐसी बलवती माया वाले हे महाप्रभु ! आप हमारे ऊपर प्रशन्न हो। हे मंगलदाय महाप्रभु ! अग्नि की छोटी सी चिनगारी रुई के थोक को भस्म कर देता है। इसी तरह अज्ञात में भी जो मनुष्य आपका नाम लेता है तो उसके अनेक जन्मों के पाप भस्म हो जाते हैं। हे मुकुंद भगवान ! मुनिलोग सामवेद के मंत्रो से आप ही का गान करते हैं। ब्रह्मांड के अन्दर तथा बाहर क्रीडा करनेवाले तथा गोलकधाम में क्रीडा करने वाले हे कृपानाथ ! पूर्व में आपने वाराहादिक कितने ही अवतारधारण किया है। इसके अलावां कल्कि आदिक कितने ही अवतार धारण करेंगे। इन सभी अवतारों के कारण रुप आपका यह हरिकृष्ण अवतार सर्वोपरि है।

दूसरे दिन अर्थात् दीपावली के दिन प्रातः काल सभा में स्वयं श्रीहरि के मुख से जो भी अमृतवचन निकले वे वचन भी हम सभी के लिये उपकारक है। भगवान श्रीहरि कहते हैं कि - हे भक्तों ! अपनी यह शरीर पंचभूत से बनी हुई है। यह शरीर क्रम से बाल, युवान, वृद्ध होती है। इस शरीर में मज्जा-मेद-नाडी, स्नायु, त्वचा, हड्डी, आमाशय मल, रुधिर, मूत्र, श्लेष्मा तथा मांस के सिवाय कुछ भी नहीं है। मेरी यह शरीर-आज, कल-वर्ष, मांच वर्ष या सौ वर्ष में निश्चित रुप से नष्ट होगी इसका निरन्तर चिन्तन करते रहना चाहिए। इस ब्रह्मांड में जो भी प्रकृतिजन्य कार्य दिखाई देता है वह काल के वेग में नष्ट होनेवाला है। परंतु इस शरीर में रहने वाली आत्मा का कभी नाश नहीं होता है। उसका कारण यह है कि आत्म अमर है। अचल है, इन्द्रियों तथा अन्तःकरण का प्रकाशक है। अधिकारी है। इसलिये में देहरुप नहीं, लेकिन आत्मरुप हूं एसा मानना चाहिए। वेद में वर्णित सच्चिदानंद स्वरुप, सर्वत्र पूर्ण, शुद्ध तथा अपरिच्छित्त जो अक्षररुप ब्रह्म है वह मैं हूँ। इसकी दृढता करनी चाहिये। ऐसी ब्रह्मरुप

आत्मा मैं प्रत्यक्ष श्रीहरि कृष्ण का दास हूं। हे भक्तों ! आपलोग अपने मन में ऐसे विचार करके, आत्मरुप बनकर हमारी श्रवणादिक नवधा भक्ति करें। हे भक्तजन ! आपकी जब वृद्धावस्था आयेगी तब दांत गिरजायेंगे। हाथ में लकडी रखनी पडेगी। शरीर में अनेक रोगो का आक्रमण हो जायेगा। ऐसी परिस्थिति पुनः न आवे इसके लिये - स्त्री, पुत्र तथा अन्य तृष्णाओं का त्याग करके अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम मेरा ही स्मरण करो। हमारी भक्ति करो। इससे कठिन काल का वेग भी पराभव नहीं कर सकेगा।

दिपावली के इस शुभ अवसर अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के तथा नंद संतो के अमृतवचन को जो अपने जीवन में उतारकर दृढ करेगा तभी इसके जीवन की सार्थकता है। दूसरा कुछ करने की जरुरत नहीं, उसके जीवन में सदा दीपावली ही रहेगी। श्रीहरिने जिन परमात्माको अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया उन्हीं का आश्रय ग्रहण करना, शिक्षापत्री में जो आज्ञा की है उसी का पालन करना, आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहकर अपने इष्टदेव की नवधा भक्ति करना ही जीवन की सार्थकता है। ऐसा करते रहने से जीवन में सदा दीपावली ही रहेगी।

कल्याण की प्रोमीसरी नोट

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदावाद)

वचनामृत में श्रीजी महाराजने ''कल्याण की हुंडी'' के ऊपर एक वृत्तान्त कहा है -

हुंडी-अर्थात् जिसे अंग्रेजी मं प्रोमीसरी नोट कहते हैं । इस में एक शाहूकार दूसरे शाहूकार के ऊपर एक कागज के ऊपर रुपये की रमक वापस करने का लेख लिख कर देता है । अब वह वापस लेने जाता है तब उसे अधिक धन राशी प्राप्त होती है । जगत के व्यवहार के लिये इस प्रचलित हुंडी का दृष्टांत श्रीजी महाराज ने ''कल्याण की प्रोमीसरी नोट'' के रुप में रुपान्तरितक किया है । इस बात को गढडा मध्य के छट्ठे वचनामृत में देखते हैं -

मोटा पुरुष जे शास्त्र मां प्रतिपादन कर्यु छे, ते सर्वे सत्य । त्यां दृष्टांत छेजे, जेम कोई मोटे शाहूकार होय ने ते कोईने हुंडी लखी आपे त्यारे, कागड़मां तो एकेय रुपियो जणातो नथी पण रुपिया साचा छे । ते ज्यारे हुंडी जे शाहूकार ऊपर लखी आपी होय तेने आपे ते हुंडीमांथी ज रुपियानो ढगलो थाय छे । तेम मोटा पुरुषनी आज्ञाए करीने जे धर्म पाले त्यारे हमणां कांई विधिनिषेधमां जणातुं नथी पण अंते मोटा पुरुषनी आज्ञा पालनारनुं कल्याण थाय छे । जेम हुंडीमांथी रुपिया निसरे छे तेम । अने जे समर्थ शाहूकारे हुंडी लकी होय अने तेनो विश्वास न करे तेने मूर्ख जाणवो । केम के तेने ते शाहूकार ना प्रतापनी खबर नथी (ग.म. ६)

परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण श्रीहरि स्वयं सर्वोपरि शाहूकार बनकर कल्याण की ऐसी हुंडी के सर्जक है । उनके द्वारा प्रवर्तित नियम-नीति के अनुसार आज्ञा का पालन करने वाले हम लोग हुंडी के धारक हैं । श्रीजी महाराज ने जिसके ऊपर कल्याण की हुन्डी लिखी है । वह समर्थ शाहूकार कौन ? इसके लिये गढडा प्रथम के ४८ वें का, शिक्षापत्री श्लोक ६२ तथा निष्कुलानंद काव्य - पुरुषोत्तम प्रकाश के प्रकार ३९ एक के बाद देखने में मिलेगा ।

कांजे अमें तो सत्पुरुष छीये ते अमारी आज्ञा ए करीने तमे सर्वे श्री नरनारायणदेवनी पूजा राखशो तो अमारे ने नरनारायणने सुधी मन-मेलाप छे, ते अमे श्री नरनारायणने कहीशुं जे हे महाराज ! ते पंच वर्तमानमां रहीने अमारी आपेल जे तमारी मूर्ति पूचे तेमां तमे अखंड करीने रहेजो । माटे ते नरनारायणदेव छे । तेने अमे स्नेहरुपी पाशे बांधीने जोरावरी पणे राखीशुं माटे तमे सर्वे एम निश्चे जाणजो जे ए मूर्ति ते श्री नरनारायणदेव पंडेज छे ।(गढडा प्रथम-४८)

श्रीकृष्ण भगवान का जो स्वरुप है उस स्वरुप को आचार्य महाराजश्री ने पूजा करने को दिया हो अथवा आचार्यश्री ने जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा की है उसी की सेवा करनी चाहिए, अन्य की सेवा करना योग्य नहीं है । लेकिन वंदन करने के योग्य है ।(शि.प. ६२)

धर्मवंशीनी गादी ए बेसी रे, बडी कावशे धर्म उपदेशी रे ।
माटे एथी तरशे अपार रे, निश्चे जाणजो ए निरधार रे ॥
बहुकाल लगी कल्याण रे, थाशे निश्चे जाणो निरवाण रे ।
एवी इच्छा छे जो अमारी रे, एवुं धआम थी लाव्या अमे धारी छे ।
एम बोल्या श्रीहरि हरखी रे, सुणी वात लीधी छे जो लखी रे ॥

(पुरुषोत्तमप्रकाश प्रकार ३९)

भगवान स्वामिनरायण हुंडी के स्वयं सर्जक बने हैं । उन्होंने ही इस पृथ्वी पर समर्थ शाहूकारों की नियुक्ति की है । वे हे महाप्रतापी श्री नरनारायणदेव, दूसरे हैं, उन्हीं के

पेईज नं. १३

प.पू.महाराजश्रीना मुखेथी आशीर्वचन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४३ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर ता. २३-१०-१५ (विजया दशमी) चराडवा धाम।

सर्व प्रथम तो आज के प्रसंग पर संत-हरिभक्त जो हमारे प्रति शुभ भावना व्यक्त किये उसके बदले में सभी का धन्यवाद। हम व्यक्तिगत जन्मोत्सव को नहीं मानते, कई लोग ऐसा मानते हैं कि जलसाकरने के लिये जन्मोत्सव मनाया जाता है। यह वात सर्वथा असत्य है। इसमें बहुत आनंद नहीं है। परंतु महाराजने यह पद (स्थान) दिया है, इस पद की गरिमा को ध्यान में रखकर अलग-अलग स्थानोपर उत्सव करते हैं। कलोल, ईडर इत्यादि स्थलो पर इससे पूर्व उत्सव किया जा चुका है। यह उत्सव होना भी चाहिए। इससे स्थानिक लोग-जिस स्थान पर हो रहा है वहाँ के आसपास के लोगों को इस कार्यक्रम का लाभ मिले। इसके संबंधसे लोग मंदिर में जायेंगे। प्रभु का दर्शन करेंगे, माहात्म्य समझ में आयेगा सत्संग नवपल्लवित होगा, महाराज की विशेष बजन-भक्ति होगी। इसके लिये हम मंजुरी देते हैं।

अपने देश में सत्संग का जो विकास हुआ है, उसमें हम या अन्य किसी एक व्यक्ति से नहीं हुआ है। सत्संग के अंग के रुप में आप लोग हमें जिस तरह का सहयोग देते हैं, जो प्रेरणा देते हैं, इसी से सत्संग की प्रगति-उन्नति होती है। हम सभी को शक्ति देने वाले महाराज हैं। किसी भी क्षेत्र में उन्नति का यश कोई व्यक्ति लेना चाहे तो हमारी दृष्टि में वह महामूर्ख है। भगवान के बल से तथा भगवान को साथ रखकर जो कार्य किया जाता है वह बड़े लम्बे

समय तक सुख देता है। स्वयं के बल से जो कार्य करता है उसका वह कार्य संभवत: प्रारंभ में अच्छा होगा लेकिन पीछे चलकर उसका परिणाम अच्छा नहीं होता।

नंद-संतो की वात करें तो संकल्प मात्र से ग्रह को रोक देते थे। मरे को जीवित कर देते थे, निर्धन को धनवान कर देते थे। एक-एक संत भगवान की तरह पूजेजा सकते थे, परंतु वे संत कहते थे कि, हे महाराज ! आपके बल से हम जो भी कार्य करते हैं वह सफल होता है। नंद संत महाराज की ऐसी मर्यादा रखते थे। हम सभी महाराज या नन्द संतो से बड़े तो नहीं है न। इन से बुद्धिमान भी नहीं है। दूसरे को जो करना हो वह करे हम तो महाराज द्वारा स्थापित श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव का दृढ आश्रय रखेंगे, महाराज के सिद्धांतो, शास्त्रों की आज्ञा का पालन करेंगे तो सुखी रहेंगे, सुख नहीं - सुख तो स्मरणर मामलोके पास भी होता है, महासुख पो प्राप्त करेंगे, यह महाराज ने हम सभी को वचन दिया।

हरिभक्तने कहा कि, महाराजश्री के साथ बैठा हूँ। लेकिन समय इतना गतिशील हो गया है कि कार्यक्रमों की डायरी भर जाती है, समय निकालना बड़ा कठिन है, फिर भी प्रयत्न करुँगा। जो कार्यक्रम होते हे वैं सत्संग लक्षी होते हैं। हमारे लिये तो **C.L.** जैसी इमजंसी छुट्टी भी नहीं होती, **E.L.** भी नहीं है। आपका माथा दु:खता हो तो आप छुट्टी रख देते हैं। दो दिन की **Sick Leave** ले लेते हैं। हमारा माथा दुखता हो तो भी, नहीं दु:खता हो तो भी किसको कहने जांय। आप सभी के प्रेम के कारण, संतो की प्रेरणा के कारण शरीर की पीडा की चिन्ती नहीं करता। कभी डायरी देखता हूँ तो बाकी कार्यक्रम नहीं देखता कितने हो गये वह देखता हूँ। देखकर आश्चर्य होता है। अभी वर्तमान में केनेडा सेन्ट्रल जहाँ पर वर्ष में आठ महीने माइनस २० से ४० C° ढन्ढी रहती है, ऐसे शहर में महाराज की प्रतिष्ठा की। महाराज पृथ्वी पर जब मनुष्य के रुप में विचरण कर रहे थे उस समय संतो-भक्तों की रक्षा इत्यादि की वात शास्त्रों के माध्यम से वांचते रहते हैं। परंतु वर्तमान काल में भी महाराज हम सभी के साथ ही है, इसकी अनुभूति सभी को कई बार होती रहती है।

जयपुर के एक कार्यक्रम में एक हरिभक्त की गाडी लेकर। (हमारी गाडी क्यो नहीं थी, इसकी बात बाद में करुंगा) गया था। सभा के समय गादीवालाजी का फोन आया कि आप को प्रात: काल यहाँ के कार्यक्रम में जाना है. तो फ्लाईट से आजाइये, दो घन्टे आराम भी मिल जायेगा और कार्यक्रम में समस से पहुँच जायेगे। महाराज की प्रेरणा होगी, उनका पुन: फोन आया और में जयपुर से मुंबई-मुंबई से अहमदाद आगया। उधर गाडी में जे.के. स्वामी, वनराज भगत आ रहे थे, ड्राईवर ज्यों हि शामलाजी चेक पोस्ट टोलटेक्ष प्लाजा पर गाडी खडी की त्यौं ही पीछे से दूसरी गाड़ी १३० कि.मी. की गती से आकर मेरी गाडी को टक्कर मार दी। गाड़ी का बहुत नुकशान हो गया। वनराज भगत को थोड़ा लगा, टोलटेक्ष प्लाझा पर **C.C. T.V.** केमेरा में यह दृश्य दिखाई दिया। हम उसी गाडी में आ रहे थे। परंतु निर्णय बदले इस लिये निर्विघ्न घर आ गये। यदि उसी गाडी में होते तो चोट लगती और दूसरे दिन का कार्यक्रम रद्द करना पडता। महाराजने रक्षा की। मैंने हरिभक्त की गाडी क्यों ली उस विषय में बताता हूँ। महारी गाडी भी रिपेरींग में गई थी, उस की भी एसी ही घटना हुई थी। थोड़े समय पहले हम कच्छ (भुज) के भचाउ शहर के कार्यक्रम में जा रहे थे। फोरलेन रोड हो तो कैसा लगता है, ऐसे फोरलेन रोड पर हमारी गाडी दौड रही थी, उसी समय एक गाडीाला हमारी गाडी के लगोलग अपनी इतनी तेज गाडी मोड़ा कि एक्सीडन्ट सिवाय कोई रास्ता नहीं था। हमारे ड्राईवर ने उसके बचाने के लिये पहली लेन से चौथी लेन में लेजाने के लिये जम्प लगाया और सभी को बचा लिया। हम हसने लगे, कारण यह कि प्रत्यक्षपना की अनुभूति हुई, परिणाम स्वरुप सभी बच गये। पीछे संतो की गाड़ी आ रही थी, संतोने कहा कि उस

भाई को बुलाया जाय वह तो मरेगा ही हम लोगों को भी मारेगा क्या ? वह भाई मेरे पास आया तो वह हरिभक्त निकला । उसका बालक बिमार था उसे हास्पिटल ले जा रहा था । वह हरिभक्त तथा उसका बालक भी बच गया । हमारी गाडी इसी कारण से रीपेरींग में गई थी । किसी हरिभक्तने अपनी गाडी बड़े आग्रह के साथ जयपुर जाने के लिये दी थी ।

गढपुर से भी संत पधारे है, अमदावाद, मूली, भुज के साथ गढपुर देशमें भी सत्संग खूब वृद्धि को प्राप्त हो तथा उपस्थित हरिभक्त सपरिवार खूब सुखी हों ऐसी प्रार्थना के साथ अंत में प.पू. महाराजश्रीने सभी को शुभाशीर्वाद दिया था ।

– गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

अनु. पेईज नं. १० से आगे

ऊपर स्वरुप धर्मवंशी – आचार्य, तीसरे शाहूकार है संत ।

जिस तरह बैंको का चेक परिवर्तित नहीं हो सकता, चेक में कोई फेरफार किया जाय तो लिखने वाले का हस्ताक्षर आवश्यक होता है । जिस तरह व्यवहार में प्रोमीसरी लेख के ऐसे नियम होते है वैसे ही कल्याण की प्रोमीसरी लेख के भी निमय होते हैं । शिक्षापत्री के २१२ श्लोक में श्रीहरिने स्पष्ट लिखा है ।

हमें सर्वोपरि शाहूकार श्रीहरि की कल्याणकारी लेख के ऊपर विश्वास करके उनके द्वारा स्थापित श्रीनरनारायणदेव, पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतो की आज्ञा में रहकर भजन भक्ति करनी है ।

जगत के व्यहार की प्रोमीसरी लेख में से रुपये की धनराशी मिलती हो तो, परमेश्वर की प्रोमीसरी लेख में से क्या कल्याण नहीं मिल सकता ?

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર સુરેન્દ્રનગર દશાબ્દી મહોત્સવ

કથા તારીખ : ૨૧/૧૧/૨૦૧૫ થી ૨૫/૧૧/૨૦૧૫
બપોરે ૧૨-૩૦ થી ૩-૩૦ D-LIVE પ્રસારણ રહેશે
બપોર પછી ૩-૩૦ થી ૬-૩૦ LIVE પ્રસારણ

કાર્યક્રમની રૂપરેખા

તારીખ : ૨૫/૧૧/૨૦૧૫
રાગીનો સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ LIVE પ્રસારણ રહેશે
તારીખ : ૨૬ અને ૨૭/૧૧/૨૦૧૫
સવારે ૯-૩૦ થી ૧૨-૩૦ તેમજ
બપોર પછી ૩-૩૦ થી ૬-૩૦ LIVE પ્રસારણ

સંવત ૨૦૭૨ કારતક સુદ - ૧૦ તા : ૨૧/૧૧/૨૦૧૫ ને શનિવાર

પોથીયાત્રા	મહામંત્ર -ધુન	દિપ પ્રાગટય	કથા શુભ પ્રારંભ	શ્રી ઘનશ્યામ જન્મોત્સવ	તા : ૨૩/૧૧/૨૦૧૫ ને સોમવાર યુવા શિબીર
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર થી કથા સ્થળે જશે.	સવારે ૮-૩૦ કલાકે	સવારે ૯-૩૦ કલાકે	સવારે ૯-૩૫ કલાકે	સાંજે ૬-૦૦ કલાકે	બપોરે ૧-૦૦ થી૩-૩૦ કલાકે

તા : ૨૪/૧૧/૨૦૧૫ ને મંગળવાર | પ.પૂ.અ.સૌ.ગાદીવાળાશ્રી પધારશે. સવારે ૯-૩૦ કલાકે | બહેનો ની યુવા શિબીર બપોરે ૧-૦૦ થી ૩-૦૦ કલાકે

કારતક સુદ - ૧૫ તા : ૨૫/૧૧/૨૦૧૫ ને બુધવાર

પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી પધારશે	શ્રી હરિયાગ નો પ્રારંભ
સવારે ૯-૩૦ કલાકે	પ.પૂ.લાલજીમહારાજશ્રીના શુભ વરદ હસ્તે સવારે ૯-૪૫ કલાકે

શહેર તથા જીલ્લાના તમામ ભુદેવોની બ્રહ્મ ચોયાર્સી
બપોરે ૧-૦૦ કલાકે,

કારતક સુદ - ૧૫ તા : ૨૫/૧૧/૨૦૧૫ ને બુધવાર આનંદભુવન -વઢવાણ ખાતે

૨૬૧ બટુકોને યજ્ઞ પવિત વિધી	૩૫ બ્રાહ્મણ ની કન્યાઓના સમુહલગ્ન
સવારે ૭-૦૦ થી ૧-૦૦ કલાકે	સવારે ૭-૦૦ થી ૧-૦૦ કલાકે

બટુકો તથા વર-કન્યા ને આર્શીવાદ સભા-વિદાય
બપોરે ૧-૩૦ કલાકે,

કારતક વદ - ૧ તા : ૨૬/૧૧/૨૦૧૫ નેગુરુવાર

પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી પધારશે	પ.પૂ.અ.સૌ.મોટા ગાદીવાળીશ્રી પધારશે	રાજ્યપાલશ્રી પધારશે	સમુહ લગ્ન	વર-કન્યા ને આર્શીવાદ પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી તથા મહામહિમ રાજ્યપાલશ્રીના શુભ વરદ હસ્તે
સવારે ૯-૩૦ કલાકે	સવારે ૯-૩૦ કલાકે	માનનીયશ્રી મહામહીમ રાજયપાલશ્રી ગુજરાત, સવારે ૧૦ -૩૦ કલાકે	સવારે ૭-૩૦ થી ૧૧-૩૦ કલાકે	સવારે ૧૧-૩૦ થી ૧૨-૩૦ કલાકે

કારતક વદ - ૨ તા : ૨૭/૧૧/૨૦૧૫ નેશુકવાર | વ્યાખ્યાન માળા દરરોજ :- સવારે ૧૧-૦૦ કલાકે | દૈનિક મહાપૂજા :- સવારે ૭-૩૦ કલાકે

પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી પધારશે.	શ્રી ઠાકોરજીનો મહાભિષેક	શ્રી ઠાકોરજીનો છપ્પન ભોગ
સવારે ૬-૩૦ કલાકે	સવારે ૬-૩૫ કલાકે	સવારે ૯-૦૦ કલાકે

શ્રી હરિયાગ નો પૂર્ણાહુતી	કથાની પૂર્ણાહુતી	પ્રાસંગીક સભા
સવારે ૧૦-૦૦ કલાકે	સવારે ૧૦-૧૫ કલાકે	સવારે ૧૦-૩૦ થી ૧૧-૩૦ કલાકે

પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી ના આર્શીવાદ	મહામંત્ર -ધુન ની પૂર્ણાહુતી
સવારે ૧૧-૪૫ કલાકે	બપોરે ૧૨-૧૫ કલાકે

નોંધ :- બહારગામથી પધારતા મહેમાનો માટે ઉતારા તથા પ્રસાદની વ્યવસ્થા રાખવામાં આવેલ છે.

કારતક વદ - ૨ તા : ૨૭/૧૧/૨૦૧૫ નેશુકવાર

સુરેન્દ્રનગર બાલીકાઓનો સાંસ્કૃતિક પ્રોગ્રામ	પ.ભ.જ્યેશભાઈ સોની દ્વારા કિર્તન ભક્તિ	જોરાવરનગર યુવાનો દ્વારા નાટક તથા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ
તા. ૨૧-૧૧-૨૦૧૫, રાત્રે ૯-૦૦ થી ૧૧-૩૦	તા. ૨૨-૧૧-૨૦૧૫, રાત્રે ૯-૦૦ થી ૧૧-૩૦	તા. ૨૩-૧૧-૨૦૧૫, રાત્રે ૯-૦૦ થી ૧૨-૦૦

નામાંકિત કલાકારો દ્વારા લોકડાયરો તથા ભજન	સાહિત્ય અને હોસ્યરસ ખ્યાતનામ કલાકાર શ્રી જગદીશભાઈ ત્રિવેદી તથા સહાબુદિન રાઠોડ (થાન) હાસ્યરસ પીરસસે
તા. ૨૪-૧૧-૨૦૧૫, રાત્રે ૯-૩૦ થી ૧-૦૦	તા. ૨૫-૧૧-૨૦૧૫, રાત્રે ૯-૩૦ થી ૧૧-૩૦

સમુહ રાસોત્સવ તા. ૨૬-૧૧-૨૦૧૫, રાત્રે ૯-૦૦ થી ૧૧-૦૦

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

मनकी शांति तथा अंतर की शांति जहाँ मिले उसका नाम है श्री स्वामिनारायण म्युजियम । यहाँ के श्री स्वामिनारायण म्युजियम में इस वर्ष धन तेरस के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से धनपूजा होगी । उस पूजित धन, सोना-चांदी के सिक्का के रुप में हरिभक्त लोग अपने घर लेजा सकते हैं । इसी तरह कालीचौदश के दिन हनुमानजी का पूजन किया जायेगा । दीपावली के अवकाश में दर्शनार्थी आयेंगे, भीतर धरमपुरकी कुशल कुंवरबा, जेतलपुर की गंगामा, महेसाणा की कशलीबा तथा कला भगत, रामदासभाई, जोबनपगी इत्यादि भाग्यशाली भक्तों के साथ जुड़ी हुई कथा तथा उस कथा के साथ श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करेंगे । म्युजियम में प्रत्येक प्रसंग या वस्तु में एक कविता छुपी हुई है । यह सुन नहीं सकते लेकिन अनुभव अवश्य कर सकते हैं । अंतकाल में आंखका देखा स्मरण न हो, अनुभव किया हुआ स्मरण हो जाय तो भी कल्याण निश्चित ।

म्युजियम में प्रत्येक वस्तु शास्त्रीय संगीत के शौखीन प.पू. बड़े महाराजश्री की देख रेख में तैयार होने से ताल से परिपुष्ट है । उस में भी ८ नं. होल में डोल्बी साउन्ड सिस्टम का सन्नाटा है । वह पवित्र मौन अंतर में इतनी शांति देता है कि वहाँ श्रीजी महाराज की उपस्थित का अनुभव हुए विना रहता नहीं है ।

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्रीने तो सत्संग को सबसे बड़ी अमूल्य भेंट देदिया है । परंतु अपने भीतर श्रद्धा होगी तो म्युजियम की मुलाकात लेने के बाद ही परिणाम तक पहुँचा जा सकेगा । अन्यथा दूर से श्रवण मात्र ही रहेगा । संक्षेप में कहे तो हृदय में आनंद को भर देने वाला श्री स्वामिनारायण नाम से परिष्कृत अर्थात् श्री स्वामिनारायण म्युजियम ।

– प्रफुल खरसाणी

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए ।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अक्टूबर-२०१५

रु.१,०१,०००/-	अ.नि. बचीबा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर हवेली
रु.११,१५१/-	अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब ११३ वें जन्म दिन के निमित्त
रु.८,२००/-	अ.नि. पुरुषोत्तम स्वामी - कलोल
रु.५,३००/-	अ.नि. प.भ. भालजा साहब के जन्म दिन के उपलक्ष्य में (एक हरिभक्त की तरफ से भेट)
रु.५,००१/-	पटेल भक्तिभाई शिवदास वडुवाला।
रु.५,००१/-	अ.नि. मनिष (मनु) जयंतीलाल डांगरवावाला - गांधीनगर वार्षिक पुण्यतिथि के निमित्त।
रु.५,०००/-	पटेल उन्नतिबहन राजेन्द्रकुमार, धनसुरा।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अक्टूबर-२०१५)

ता. ०२-१०-१५	हीरालाल माणेकलाल पाटडीया, जुना वाडज।
ता. ०४-१०-१५	अ.नि. मंगलभाई कानदास पटेल कृते नरेन्द्रभाई - डांगरवावाला।
ता. १४-१०-१५	कच्छ पदयात्रा संघ कृते सां.यो. नानबाई, सां.यो. नानबाई केरा कच्छ(भुज)
ता. १८-१०-१५	सत्संग समाज स्वामिनारायण मंदिर (सेक्टर-२ गांधीनगरकृते महंत स्वा. पी.पी. स्वामी (छोटे)
ता. २०-१०-१५	मनजीभाई हिराणी (५० वर्ष गांठ के निमित्त) यु.एस.ए.।
ता. २५-१०-१५	कामलाबहन मणीलाल पटेल कृते नरेन्द्रभाई - डांगरवावाला - बोस्टन।
ता. २९-१०-१५	भक्तिभाई माधवदास पटेल - कलोल।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

बुद्धि दात्रे नमः

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

कभी विचार किये हैं ? किसका विचार ! वह यह कि कभी भगवान प्रसन्न होकर वर मांगने को कहें तो क्यां मांगेगे ? बडा कठिन है। उसमें भी दो वरदान मांगने की वात हो तो और भी कठिन है। भगवान कहते हैं कि मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूँ, तुम्हें दो वरदान में से एक वरदान मांगने को कहता हूँ। (१) बुद्धि (२) धन। इन दो विकल्पों में से कौन पसन्द करोंगे। ऐसे दीपावली के त्यौहार में मन में ऐसा होगा कि धन ही मांग लूं। उससे नये कपड़े खरीदूं, नया फर्नीचर बनवा लें, गाडी ले आयें, अन्य भी खरीदी करें। इस वात को जानने के बाद यह निश्चित करेंगे कि दो में क्या मांग लूं।

वात इस तरह है कि वैशाख - ज्येष्ठ का महीना था। दिन में प्रचंड गर्मी पड़ रही थी, सभी लोग रात्रि के समय यात्रा करना पसंद करते हैं। रात्रि में प्रायः वसें भरी जाती हैं। ऐसे समय में एक सज्जन अहमदाबाद से सूरत जाने वाली बस में बैठ गये। मुसाफिरों से भरी बस सूरत के लिये प्रस्थान की। बस में बैठे मुसाफिर एक दूसे से वात कर रहे थे, एक दूसरे का परिचय भी पूछते थे। कोई राजकारण पर चर्चा कर रहा था तो कोई चोरी बेइमानी की बात कर रहा था। सभी एक दूसरे से अपने विचार कह रहे थे। कोई कह हरा था कि चोर आकर पूरी बस लूट ले तो सभी का सबकुछ लुट जायेगा। यह सुनकर किसी अन्य यात्री ने कहा कि मुझे इस विषय का बहुत अनुभव है। मेरे पास बचने के बहुत सारे उपाय है। लोगोने पूछा कि एकाद उपाय तो बताइये, उसमें बिना संकोच के जाकीट के भीतर जहाँ १०,०००/- रुपये छिपाकर रखे थे उसे बताया। उसने भीतर एक थैली बनाकर ऊपर से सिलाई कर दिया था। इस तरह से पैसे बचाया जा सकता है।

दूसरा भाई उसकी वात शांति से सुन रहा था। लेकिन कुछ बोले विना यात्रा कर रहा था। थोड़ी देर के बाद बस खड़ी हो गयी। सभी लोग देखने लगे कि क्या हुआ ? क्यों एकाएक बस खड़ी हो गयी ? यह देखते उस बस में दो

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

बन्दूक धारी चढ गये। चढते ही बोले कि आप लोगों के पास जो भी हमें देदीजिये, अन्यथा लूंटेगे भी और जान भी मार देंगे। सभी घबडा गये। एक सज्जन बोले कि देखो भाई ? आप को कितने रुपये की जरुरत है यदि आपको दश हजार रुपये मिल जांय तो, आप को कोई, तकलीफ होगी ? यदि आप हमें दश हजार रुपये दे देंगे तो हम विना लूंटे चले जायेंगे। उस सज्जन ने जो दश हजार रुपये कोट के भीतर छिपाकर रखे थे, उनकी तरफ इशारा करके कहा कि इस भाई के पास दश हजार रुपये हैं। वे बन्दूकधारी दश हजार रुपये लेकर चलते बने। जिसभाई के रुपये गये वह तो लाल बबूला हो गया। आपको क्या जरुरत थी हमारे पैसे बताने की। सज्जन कहने लगा, आप घबडाईये नहीं आपके दशह जार रुपये के बदले में मैं पन्द्रह हजार रुपये देता हूं। सभी विचार करने लगे कि, यह भाई ऐसा क्यों कह रहा है। चोर को दश हजार रुपये दिलाकर स्वयं का पंद्रह हजार रुपये दे रहा है। यह सुनकर उस सज्जन ने कहा कि भाई आप लोग सुनिये, मेरे पास १ लाख रुपये हैं, वह मेरा एक लाख तो लेता ही साथ में पूरी बस के पैंसिजरो को लूटता। यह वात सुनकर सज्जन की बुद्धिमानी की प्रशंसा करने लगे।

मित्रो ! ख्याल आया ? सज्जन व्यक्ति के पास बुद्धिथी

इसलिये उसका पैसा बच गया। बुद्धि नहीं होती तो उसका तो जाता ही अन्य सभी का चला जाता। बस में यात्रियों के पास मात्र रुपये ही नहीं होते बल्कि अलंकार भी होते है। ऐसी बुद्धि में ही ज्ञान का निवास होता है। इसलिये जिसे सुखी रहने की इच्छा हो वह सदा ज्ञान प्राप्ति को महत्व दे। जिंदगी का रास्ता बड़ा लंबा है। इस में सद्‌गुणों को, संस्कारो को लूटने वाले कभी भी आसकते हैं। उस समय यदि सत्संगरुपी बुद्धि अपने पास होगी तो सद्‌गुणों को तथा संस्कारो को बचा सकेंगे । अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान का एक नाम ''बुद्दि दात्रे नमः'' है। इसलिये अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि इस अंक के वाचक मित्रों का जीवन सुखमय बने, इसी के साथ सभी को जयश्री स्वामिनारायण के साथ नूतन वर्षाभिनन्दन।

●

सहजानंदी सिंह

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

सधवानारी सिन्दूर तथा मंगलसूत्र यदि धारण न करे तो उसे शर्म आये तो कैसा कहा जायेगा। योद्धाको हाथ में हथियार धारण करने से शर्म आवे तो कैसा कहा जायेगा ? राजा को मुकुट धारण करने में शर्म आवे तो कैसा कहा जायेगा। आप ही कहिए अच्छा लगेगा क्या ? नहीं। तो यदि सत्संगी होकर तिलक-चन्दन करना उसे अच्छा न लगे तो, शरम आवे तो उसे क्या कहा जायेगा। अच्छा कहा जायेगा ? अच्छा नहीं कहा जायेगा। हम यह देखते हैं कि कई लोग ऐसा कहते रहते हैं कि हमारा पांच पीढी का या छ पीढी का सत्संग है। फिर भी वह मस्तक पर तिलक-चन्दन न करे तो कैसा लगेगा । तिलक चंदन तो सत्संगी के सौभाग्य का प्रतीक है। इसे धारण करने में शर्म आवे तो सत्संगी कैसा।

कंठी-तिलक-चन्दन की चाहना होनी चाहिए। इस पर एक सत्य घटना देखिये - ''हरि नो मारग शूरानो, नहिं कायरनुं काम जोने'' एक युवान अपने मित्र के सहयोग से सत्संगी हुआ। ढीला सत्संगी नहीं, दृढ सत्संगी बना। इस का परिणाम यह हुआ कि - वह सुखी होने लगा। समृद्धिबढने लगी। सभी लोग उससे ईर्ष्या करने लगे। सभी सत्संग से अलग करना चाहते थे।

उस युवान का विवाह निश्चित हो गया। विवाह में ईर्ष्यालु भी साथ में आये। जो सगा होते हैं वे प्रिय नहीं होते, जो प्रिय होते हैं, वे सगा नहीं होते। व्यवहार के लिये सभी को साथ रखना पडता है। वे ईर्ष्यालु साथ में थे - वे कुछ नुक्शान करने का मन बना लिये। बारात द्वार पर पहुँची लडकी के पिता सभी का स्वागत किये। बारात गाँव के स्कूल में रुकी। उस समय ऐसा होता था कि बारात २-३ दिन तक रुकती। विवाह रात्रि में हुआ। दिन में सभी खाली बैठे थे। इतने में उन ईर्ष्यालुंओने लड़की के पिता से संपर्क किया, उनके साथ बात करते देखकर लड़के ने समझ लिया था कि ईर्ष्यालु अपना काम कर दिये होंगे। थोडी देर में ईर्ष्यालुओं के साथ लड़की का पिता वहाँ आया और कहने लगा कि तुम अपनी कंठी तोड दो, तिलक-चन्दन निकला दों, सत्संग छोड़ दो। अन्यथा हमें विचार करना पड़ेगा। उन ईर्ष्यालुओं को था कि ऐसा करने से युवान घबड़ा जायेगा। लेकिन युवान दृढ निश्चयी था। उसने तुरंत उत्तर दिया कि आपको जो करना हो कीजिये मैं कंठी नहीं तोडूंगा और तिलक चंदन नहीं मिटाऊंगा। सत्संग के लिये तो मैं मिट सकता हूँ।

युवान के मुख से इस तरह की वात सुनकर लडकी पिता अवाक रह गया। दूसरे ईर्ष्यालुओं को लगा कि कुछ वात और न बढ़े, इस लिये समाधान कराने लगे। अभी कंठी उतार दो-तिलक-चन्दन मिटा दो, जब घरजाना तब सभी धारण कर लेना। यह सुनकर लड़के ने कहा कि मैं विना विवाह के यावत जीवन रह लूंगा लेकिन तिलक-चन्दन-कंठी को नहीं निकालूंगा।

वर के मुख से इस प्रकार की दृढवाणी सुनकर सभी के पैर कांपने लगे। अब क्या करुं ? इन लोगो की वात में मुझे नहीं आना था । अब क्या करे ? ऐसा करो कि तिलक-चन्दन-कंठी सभी पहने रखो, लेकिन विवाह के मंडप में सभी के सामने कहता कि मैं सत्संगी नहीं हूँ।

पेईज नं. २१

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से) "अधिक आषाढ कृष्ण एकादशी की सत्संग सभा में कालुपुर मंदिर हवेली) "अपने जीवन को आदर्श बनाना है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

परमात्माने दया करके हमें मनुष्य की योनिमें जन्म दिया । इसलिये हमें विचार करना चाहिए कि ''मानव जीवन का हेतु क्या है ?'' ''हमें क्या प्राप्त करना है ?'' हम ऐसा जीवन क्यों जीते हैं ? मानव देह मिली है तो मानव धर्म तो होना ही चाहिए ? आज समाज में लोग तीन प्रकार से जीवन जीते हैं । पाशवी, मानवीय, दैवी जीवन । ८०% प्रतिशत लोग पाशवीजीवन जीते हैं । वर्तमान काल में - मांस भक्षण, मदिरापान, व्यभिचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, अधिक मात्रा में चल रहा है । प्रतिदिन समाचार पत्र में प्रातः यही सब देखने में मिलता है । जो अपने हक का नहीं है, दूसरे का है उसे जो भोगता है उसे पाशवी कहा जायेगा । लोभ, लालच तथा विषय से प्रेरित होकर जो अपने लिये भोगता है वह मानव धर्म है । जिन्हें सत्संग का रंग लग गया है वे लोग मानवीय जीवन जीते हैं । इसीसे पृथ्वी टिकी है । मानवीय जीवन किसे कहा जायेगा ? जो दूसरों के लिये विचार करते हैं । कुछ अच्छा करने का प्रयत्न करते हैं । किसी प्राणी मात्र को दुःख न देना ही मानव धर्म है । जब हमें कोई दुःख देता है तब अच्छा नहीं लगता तो हमें भी किसी को दुःख नहीं देना चाहिए । जिसके जीवन में यह सिद्धान्त आजाय उसमें मानवता आगई । इस तरह मानव धर्म तो सब से श्रेष्ठ है । दैवी जीवन-अर्थात् तुम्हारा तो तुम्हारा है ही, मेरा भी तुम्हारा है - इस प्रकार की भावना को परोपकार कहते हैं । अपना भी दूसरे को दे दे वह परोपकारी कहलाता है । दैवीजीव बहुत कम होते हैं । जिसके भीतर सद्गुण होते हैं । वह समाज में आदर्श प्रस्तुत करते हैं । अपेक्षा के बिना दूसरों की मदद करते हैं इसे ही दैवीजीव कहाजायेगा । इसके बाद ही मनुष्य के जीवन तीन वस्तु प्राप्त होती है । - आत्मज्ञान, आत्म अनुष्ठान तथा आत्म उत्थान । आत्मज्ञान अर्थात् स्वयं की पहचान । जिस में आत्मज्ञान नहीं है मात्र शास्त्रज्ञान है उस व्यक्तिका जीवन कैसा है - नेत्रहीन व्यक्ति के सामने दर्पण जैसा है । आत्मज्ञान क्या है । आत्मज्ञान अर्थात् स्वंय के स्वाभाविक गुणों की पहचान । अपने आत्मा के तीन गुण हैं : सत् - चित् - आनंद ! सत् अर्थात् सत्यस्वरुप - जो अविनाशी है । जिसका कभी नाश नहीं होता । चित् - देखना तथा जानना । ज्ञाता तथा द्रष्टा । महाराज ने शिक्षापत्री में कहा है कि नख से शिख तक व्याप्त रहने वाला जीव है । इसी लिये वह ज्ञान स्वरुप है । आनंद अर्थात् आत्मा परमानंद का स्वरुप है । सुख तथा आनंद दोनो अलग हैं । हम कहते हैं कि आत्मा के भीतर परमात्मा का वास है । ऐसे ही परमानन्द स्वरुप है । इसीलिये कहा जाता है कि शास्वत सुख अपने भीतर ही है । आत्म अनुष्ठान क्या है ? आत्मा के ज्ञान स्वरुप को पहचानना । महाराज ने हमें जो सद्गुण दिया है, उन सद्गुणों के माध्यम से आत्मा को पहचानने की आवश्यकता है । इसी को आत्म अनुष्ठान कहा जायेगा । इसके बाद आता है आत्म उत्थान । आत्म उत्थानका मतलब ऊपर उठना । एक लक्ष्य निश्चित करके परमात्मा की तरह गति करना । भौतिक दृष्टि से ऊपर उठने की वात नहीं है । इसके लिये महाराजने जो दिया है उसी में संतोष करना चाहिए । इसी को आत्म उत्थान कहते हैं । ए तीनो वस्तु जिस मनुष्य के भीतर आजाय तो वह सच्चे अर्थ में मनुष्य बन जायेगा । इसके लिये सात्विक बुद्धि

की जरुरत पड़ती है । जब अहं का भाव निकल जाता है तब सात्विक बुद्धि आती है । बड़ा बनना भी बाधक है । इसे ही मिटाना है । पानी को स्थिर रहना हो तो ऊपर की तरह नहीं बढना चाहिए । उपर जाने वाला पानी टिकता नहीं है । पानी को नीचे आना ही पडता है । इसी तरह बांस कितना ऊंचा होता है लेकिन वही बांस एक दूसरे से जब घिसता है तो अपने वंशजाती हो नष्ट कर देता है । उसमें अग्नि तत्व की प्रधानता होती है । इसी तरह परिवार में भी होता रहता है । थोडा भी अहंकार आया कि क्रोधआना संभव है - मैं जैसा कहूँ वैसा ही होना चाहिए । यह अहंकारी व्यक्ति की वात है । हमें स्वयं में से अहंकार निकालना है । हम कौन हैं ? जो कुछ है वह भगवान का दिया हुआ है । हम जो श्वास लेते हैं उसके लिए भगवान का ऋण मानना चाहिए । हमें जो भी कुछ महाराजने दिया है तभी हम दूसरे को देते हैं । जो सच्चे मन से महाराज की याद करता है महाराज उसकी अवश्य मदद करते हैं । महाराज एकाएक सामने प्रगट होजांय तो उनके तेज को हम सहन नहीं कर सकते । परमात्मा को जब यह समझ में आता है कि यह व्यक्ति सात्विक गुणवाला है, परोपकारी है तो उसकी मदद करते हैं । उसे उत्तम प्रेरणा भी देते हैं । परमात्मा हमें निमित्त बनाते हैं । जिससे वैसी मदद करते हैं । जिस तरह आपका जितना बड़ापात्र होगा उतना ही पानी आप ले जायेंगे । विशेष ध्यान यह रखना है कि हम जहाँ बैठे है ऐसी जगह पूरे ब्रह्मांडमें कहीं नहीं है . हम कितने भाग्यशाली है कि हम मांगे रोटी मिल गयी मालपूवा महाराजके अलांवा अन्यत्र कही शांति नहीं है । भगवान का जो सच्चा भक्त होता है वह कभी दुःखी नहीं होता । आत्मा कभी दुःखी नहीं होने वाला । मन से कभी दुःखी होने की जरुरत नहीं जो कम बुद्धि के होते हैं उन्हें समझाने की जरुरत पडती है - अकल मंद के लिये इशारा काफी ।

●

स्वरुप निष्ठा

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

निष्ठा का मतलब - आश्रय, निश्चय, अचल भरोसा, सम्पूर्ण विश्वास, भगवान का आधार स्वरुपनिष्ठा इत्यादि समानार्थी शब्द श्रीहरिने वचनामृत कहा है । यह निष्ठा इसलोक तथा परलोक में सुखी होने के परमावश्यक है । निष्ठा सभी का मूल है । आध्यात्मिक मार्ग निष्ठा के ऊपर है । श्रीहरिने वचनामृत में कहा है कि इष्टदेव के प्रति जितनी निष्ठा होगी उतना ही आत्मा-अनात्मा के प्रति विवेक होगा । लेकिन इष्टदेव के विना कोई साधन सिद्ध नहीं होता । जिसे जितनी अपने इष्टदेव में निष्ठा होगी उतना ही वह बड़ा होगा, उसमें सामर्थ्य बढेगा । उसमें दैवत्व होगा । भक्ति-ज्ञान-वैराग्य इत्यादि जिस में वह निष्ठा वाला है, तथा उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं । कल्याण का मूल निष्ठा है ।

मूल जितना मजबूत होगा उतना वृक्ष मजबूत होगा । इसी तरह जितनी निष्ठा होगी उतनी भक्ति वाली होगी । निष्ठा के वृक्ष में धर्म-ज्ञान-वैराग्य-भक्ति-दिव्यता, सरलता, निष्कामता, निर्भयता, जैसे अमृतफल निकलते हैं । निष्ठा आध्यात्मिक मार्ग की श्वांस है । श्वांस बंद होते ही आंख-कान-हाथ, पैर सभी निष्क्रिय हो जाते हैं । इसी तरह भगवान या बड़े संतो की निष्ठा खत्म होते ही सत्संग में से मृत्यु हो जाती है । निष्ठा ही जीवन है । जिसकी निष्ठा कमजोर उसका धर्म कमजोर कहा जायेगा । वैराग्य, ज्ञान, भक्ति, श्रद्धा कम होने से आज्ञापालन नहीं होता ।

निष्ठा आध्यात्मिक मार्ग का आक्सीजन है । निष्ठा के बिना कल्याण असक्य है । कितने लोग संपत्ति, आत्मीय लोग, शरीर, विशाल कुटुंब के सहारे से सुखी होना चाहते हैं । इन सभी के पीछे बल देने वाले मात्र श्रीहरि हैं । श्रीहरि का जिन्हे आश्रय नहीं है उनका सम्पूर्ण बल स्वतः नष्ट हो जाता है । प्रगट भगवान में निष्ठा रखना बड़ा कठिन है । प्रगट भगवान में निष्ठा रखना बड़ा कठिन है । यदि निष्ठा पक्की हो तो विषय-बासनादि सभी तत्काल जीतेजा सकते हैं ।

धर्म निष्ठा या स्वरुप निष्ठा में से महाराज ने स्वरुप निष्ठा की प्रशंसा की है । संकट आने पर धर्म निष्ठा वाला युधिष्ठिर की तरह कमजोर हो सकते है लेकिन स्वरुपनिष्ठावाला अर्जुन की तरह अखंड आनंद में रहता है । इसलिये निष्ठा

को मजबूत रखना चाहिए । जिसकी भगवत पारायण जिंदगी है, जो भगवान के आधार से जीते हैं ऐसे निष्ठावान भक्त की भगवान स्वयं रक्षा करते हैं।

निष्ठा तथा चिंता में वैर है । यदि निष्ठा मजबूत होगी तो चिन्ता वहाँ नहीं रुकेगी । चिंता हो तो निष्ठा नहीं रुकेगी । निष्ठा आवे तो चिंता, रोग, शोक, उद्वेग सभी चले जाते हैं । जिस तरह महाभारत के युद्ध में नवमें दिन भीष्म ने प्रतिज्ञा ली, फिर भी अर्जुन शांति से सो रहे थे । भगवान उन्हे जगाये और कहने लगे कि तूं भीष्म की प्रतिज्ञा सामान्य मानता है । तब अर्जुन ने कहा कि प्रभु भीष्म पितामह की प्रतिज्ञा को सामान्य नहीं मानता हूँ लेकिन इसके साथ आपके सामर्थ्य को भी मैं जानता हूँ । इस लिये कल युद्ध में एक भीष्म नहीं, सौ भीष्म आजांय तो भी मुझे कोई चिंता नहीं । मेरे प्रभु ही कर्ता है, वे जो चाहेंगे वही होगा । उनकी इच्छा के विना एकतृण भी नहीं टूट सकता । इतना ही नहीं भगवान हमारे हित कर्ता हैं । मैं उन्हीं का दूत हूँ इसी लिये सो रहा हूँ । ऐसी निष्ठा अर्जुन की थी ।

अब हमें अपने विषय में सोचना है कि मेरी निष्ठा कैसी है । गोपालानंद स्वामी कहते कि इस जीव को प्राकृत पदार्थ जैसी प्रतीति होती है वैसी प्रतीति भगवान में नहीं होती । यहीं निष्ठा में कचाश कही जायेगी ।

लोया के तीसरे वचनामृत के अनुसार जिस में पांच प्रकार की स्थिति हो वही सच्ची निष्ठा वाला भक्त कहा जायेगा । (१) भगवान के लिये तथा संतो के लिये सर्वस्व का त्याग करने वाले को कुछ भी अलभ्य नहीं रहता । (२) निष्ठावान कभी भी भगवान या संत की आज्ञा में फेर नहीं करता । (३) महिमा समझकर कार्य करे - कठलाल की डोशी मां की तरह । भक्त की शरीर पड़े तो कल्याण ही होगा, अधोगति नहीं होगी । उपरोक्त प्रमाण से जिस में निष्ठा हो वही सच्चा भक्त कहा जायेगा । जैसे भी निष्ठावान बने की जरुरत है । निष्ठा में ही सर्वस्व समाया हुआ है ।

•

अन्तर में अजावाला करती, ज्योत जगावती

आवी दीवाली

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

दीपावली अर्थात् वैश्यों के लक्ष्मी पूजन का दिन पूरे वर्ष में क्या खर्च किये, कितना वचा इसके हिसाब का दिन । इस दिन मनुष्य को स्वयं के जीवन का भी हिंसाब करना चाहिए । वैर का भाव छोड़कर ईर्ष्या का भाव छोड़कर, क्रूरता छोडकर नये वर्ष में प्रेम-उत्साह, श्रद्धा बढ़े ऐसा करना चाहिए । दीपावली-अर्थात् दीपोत्सव । बाहर दीपक तो जलाना ही है लेकिन अन्दर भी दीपक जलाना चाहिए । दिल में अन्धकार रहेगा तो बाहर हजारों दीपक जलाने से क्या फायदा । दीपक ज्ञान की प्रतीक है । धन तेरस के दिन महालक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए । काली चौदश के दिन आलस्य, प्रमाद, अस्वच्छता, अनिष्ठ इत्यादि असुरों का नाश करना चाहिए । दीपावली के दिन ''तमसो माज्यो तिर्गमय'' सूत्र के अनुसार अन्धकार से प्रकाश की तरफ बढाना चाहिए । अपने जीवन का हिसाब किताब ईश्वर के ऊपर छोड़ देना चाहिए ।

हृदय के मंदिर में दीपक जलाना चाहिए । जीवन के अंधकार में श्रद्धा का दीपक जलाना चाहिये । भक्ति का दीपक जलावें तो जीवन दीपावली हो जाय । दिल में पड़ी हुई रावण प्रवृत्ति को परास्त करके शुभ भावनाओं को आग्रह करना ही दीपावली है । दीपक जीवन के पंथ को प्रकाशित करने के लिये होता है ।

दिल का दीपक जलते ही दीवाली आ जाती है । अन्यथा जिन्दगी के केलेन्डर में से एक-एक पन्ना करता ही जाता है । बाद में उसे कचरा पेटी में डाल दिया जाता है । जीवन केलेन्डर जैसा है । १४ वर्ष के वनवास के बाद भगवान श्री राम अयोध्या आये उस समय लोगो के मन में आनन्द था, इससे प्रभु को स्वागत में पूरे अयोध्या में दीपक जलाकर आनंद प्रगट किया गया था । सभी लोग अपने घरों में दीपक जलाये थे। उसी सयम से दीपक जलाकर उत्सव मनाने का यह पर्व (त्यौहार) प्रारंभ हुआ ।

नूतन वर्ष का मतलब पूरे वर्ष में किये गये कार्यो का

सिंहावलोकन करके आगामी वर्ष में निर्धारित कार्य को पूर्ण करने का अमूल्य अवसर।

नूतन वर्ष में कलेन्डर बदला जाता है। अपने जीवन रुपी केलेन्डर में से दिन प्रतिदिन अमूल्य जीवन का एक-एक पन्ना कम होता जा रहा है। इसका हम विचार करते हैं क्या ? मनुष्य का एक एक क्षण मूल्यवान है। जो समय बीत गया वह आनेवाला नहीं है। इसी लिये कहा गया है -

"संपत गई ते सांपडे, गया बले छे वाण।
गत अवसर आवे नहीं, गया न आवे प्राण ॥"

इसलिये हमें जो अवसर मिला है, उसका सदुपयोग करना चाहिए। जो समय को बरबाद करता है, उसे समय बरबाद कर देता है। समुद्र का सदुपयोग करने वाला ही जिन्दगी को जीत लेता है। ईश्वर ने मनुष्य को समय की संपत्ति प्रदान किया है। समय सब से मूल्यवान संपत्ति है। समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति कभी असफल नहीं होता।

दीपावली की दीप सभी के हृदय में, सभी के ऊपर प्रभु प्रसन्न रहे, सभी के जीवन में प्रकाश फैले। सभी का जीवन उन्नति कारक हो, सभी का मार्ग प्रशस्त हो, सभी लोग श्रेयस्कर मार्ग पर चलें ऐसी परम कृपालु परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना।

अनु. पेईज नं. १७ से आगे

युवानने कहा कि उस समय जो होगा हम कहेंगे। कन्या पिता को तथा ईर्ष्यालुओं को हुआ कि लड़का ढीला पड गया है, अब अपना काम हो गया है।

विवाह का मुहूर्त होगया। वरराजा तिलक-चन्दन-कंठी पहनकर विवाह मंडप में बैठे। विवाह की सभी विधिक्रमश: पूर्ण होने लगी, उसी समय लडकी का पिता आकर पूछता है कि आप सत्संगी हो ? युवानने कहा कि आप सासजी को बुला दीजिये। सासजी के आने पर युवान ने कहा कि - आप ऐसा कहिये कि भले मैं मंगल सूत्र तथा सिन्दुर पहनी हूँ लेकिन हमारे पति नही हैं। इसके बाद विचार करुँगा किअब मुझे क्या करना है। यह सुनते ही ईर्ष्यालु-लड़की पिता तथा स्वयं सासजी भी सभी ढन्ढी पड गई। सासजी कहने लगी कि इस पंचायत में पड़ने की क्या जरुरत विवाह का कार्य आगे बढाइये। धूमधाम से कन्यादान हुआ, कन्या का हाथ वरके हाथ में सौंप दिया गया। अन्त में उस युवान के निष्ठा की विजय हुई।

वाचक मित्रो ! यह आप पढे ? इसे ही कहा जाता है शूरवीरता। इसे कहा जायेगा सच्चा सत्संगी। विवाह छोड़ने को तैयार हो गया लेकिन कंठी त्याग ने को तैयार नहीं। इसे कहा जायेगा सच्चा सहजानंदी सिंह। इस वात से आप सभी निश्चित हो जाइयेगा कि तिलक-चन्दन-कंठी को धारण करने में शर्म का अनुभव होता हो तो नये वर्ष से दृढ नियम लेलीजियेगा, जिससे यह जीवन जब तक रहे तब तक कंठी-तिलक-चन्दन दृढता के साथ निश्चय पूर्वक धारण कीजियेगा। इससे नूतन वर्ष आप सभी के लिये सच्चा सुवर्णमय बनकर रहेगा।

सभी वाचक मित्र इस वात का अनुसरण करके निष्ठावान, सच्चा सहजानंदी सिंह बन सकें ऐसी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणों में प्रार्थना। सत्संग बालवाटिका के वाचक सभी मित्रों को नूतन वर्षाभिनंदन के साथ जयश्री स्वामिनारायण।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में शरदोत्सव सम्पन्न

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आश्विन शुक्ल-१५ पूर्णिमा को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपु रमें प्रसादी के विशाल चौक में श्वेत वस्त्र से शोभायमान मंडप में नाना विधपात्रो में अच्छादित दूध-चिउड़ा को रखकर उत्सवी मंडल द्वारा धुनकीर्तन किया गया । प्रथम मंच पीठ पर ठाकुरजी को विराजमान करके सभी संत-भक्तों को दर्शन का लाभ मिला था।

सभी भक्तों को दूध-चिउड़ा का प्रसाद दिया गया था। पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से को. जे.के. स्वामी तथा संत मंडलने सुंदर आयोजन किया था।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में आगामी श्री घनश्याम महोत्सव के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रम संपन्न हुए।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर घमासणा में १५१ मिनिट की महामंत्र धून

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.स्वा. देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से एवं छोटे पी.पी. स्वामी (गांधीनगर के महंत) की प्रेरणा से २४-२-१६ से २८-२-१६ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में श्री घनश्याम महोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में धार्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में संत-हरिभक्त मिलकर १५१ मिनीट की धुन किये थे। इस प्रसंग पर नारायणघाट मंदिर पधारे हुए संतो में शा. दिव्यप्रकाशदासजीने जनमंगल नामावली की महिमा समझाई थी। समग्र कार्यक्रम का गाँव के नवयुवान बड़ी संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिये थे। सभी धुन का तथा कथा का लाभ लिये थे। (को. श्री धमासणा)

(२) श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप १५१ मिनट की महामंत्र धून

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु रामीप में नारायणघाट मंदिर के श्री घनश्याम महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १५१ मिनट की धुन में नारायणघाट मंदिर से शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदास तथा शा. कुंज स्वामीने सर्व प्रथम कथा के बाद जनमंगल पाठ कराकर १५१ मिनट की महामंत्र धुन करवाई। ठाकुरजी की आरती उतारकर पूर्णाहुति की गई थी। न्यु राणीप के समस्त हरिभक्त युवक मंडल ने धुन का लाभ लिया था।(न्यु राणीप श्री न.ना.देव युवक मंडल प्रमुखश्री)

(३) बाडजी श्री स्वामिनारायण मंदिर १५१ मिनट की महामंत्र धून

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के आगामी श्री घनश्याम महोत्सव के उपलक्ष् यमें १५१ मिनट की महाधुन रखी गयी थी, जिस में नारायणघाट मंदिर से संत पधारे थे । शा.स्वा. कुंजविहारीदास तथा शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजीने सभा में जनमंगलपाठ की महिमा समझाई थी । वाडज के समस्त हरिभक्त धुन का लाभ लिये थे।

संतो ने बताया कि नारायणघाट के सभी उत्सवों में वाडज के भक्तों का पूर्ण सहयोग रहता है। इसी तरह आगामी उत्सव को संपन्न करने के लिये यहाँ के हरिभक्त तत्पर है।

(पंकजभाई भावसार)

(४) श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा में १५१ मिनट की महामंत्र धून

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के आगामी घनश्याम महोत्सव के उपलक्ष् यमें ता. १८-१०-१५ रविवार को रात्रि में ८ से ११ बजे तक १५१ मिनट की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गई थी। गांव के भक्तों ने इसका लाभ लिया था। इस प्रसंग पर नारायणघाट मंदिर से स्वा. कुंजविहारीदासजी तथा शा. दिव्यप्रकाशदासजीने जनमंगल का पाठ तथा उसकी महिमा सभी को समझाई थी। श्री नरनारायण युवक मंडल ने तथा गाँव के भक्तोने इस उत्सव में तन-मन-धन से सेवा करने की उत्सुकता बताई थी।

(श्री नरनारायण युवक मंडल कृते मयूरभाई पटेल)

(५) नारायणघाट मंदिर में वृक्षारोपण

श्री घनश्याम महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ४-१०-१५ को श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में पर्यावरण को ध्यान में रखकर वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया था। प.पू.

बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों २००० वृक्षों का प्लोट मोटेरा, साबरमती, वाडज, राणीप, न्यु राणीप, मेघाणीनगर, घाटलोडिया, वडनगर, झुंडाल के हरि भक्तों को प्रसाद के रुप में दिया गया था। उस के रख रखाव की भी सूचना दी गई थी। इसके अलांवा नारायणघाट मंदिर में वृक्षरोपण किया गया था। (शा. दिव्यप्रकाशदास - नारायणघाट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरीया श्री गणपति विसर्जन का उत्सव

कांकरिया मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सांनिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा आनंद स्वामी की प्रेरणा से जलझीलणी एकादशी को श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा श्री गणपतिजी की भव्य रथयात्रा पूरे मणीनगर में निकाली गई थी। कांकरिया तालाब के किनारे श्रीहरि के प्रसादी की जगह पर पहुंची थी। जहाँ पर ठाकुरजी की आरती करके उत्सवी मंडल ने उत्सव किया था। संतो ने श्रीहरि की महिमा समझाया था। बाद में जलक्रीडा कराकर गणपतिजी का विसर्जन किया गया था। सभी भक्तो को फलाहार करवाया गया था।

धुन भजन

यहाँ के कांकरिया मंदिर में अ.नि.स.गु. शा.स्वा. हरिगोविन्ददासजीकी पुण्य तिथी के निमित्त धुन-भजन का आयोजन किया गया था। जिस में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की बहने भी इस कार्यक्रम में जुडी थी।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा संत श्राद्धपक्ष में हरिभक्तों के घर भजन-धुन करके सभी को प्रसन्न किये थे।

(जिज्ञेशभाई श्री न.ना.मं. कांकरीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया महिला मंडल द्वारा श्राद्ध पक्ष में श्रीहरि कीर्तन

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाजी की आज्ञा से कांकरिया श्री नरनारायणदेव महिला मंडल की बहनोने श्राद्धपक्ष में कांकरिया, मणीनगर, बापूनगर, इशनपुर, घोडासर, जेतलपुर इत्यादि विस्तारो में रात्रि के समय सत्संगियो के घर धुन-भजन-कीर्तन करके लाभ दिया था। जेतलपुर मंदिर से प्रायः सांख्ययोगी बहने भी कथा का लाभ देती थी। सभी सभाओं में बड़ी संख्या में बहनोने लाभ लिया था। (श्री नरनराायणदेव महिला मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच में पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से प.भ. लालजीभाई डोबरीया की तरफ से ता. २९-९-१५ से ५-१०-१५ तक स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत ''यमदंड'' का सप्ताह पारायण किया गया था। श्रद्धापूर्वक भक्तों ने श्रवण किया। इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर तथा काकंरिया मंदिर के संत पधारे थे।

(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल में उत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर में चातुर्मास में नियम की एकादशी को हरिभक्तोंने श्रीहरि द्वारा बताये गये नियमो को धारण किया था। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को ठाकुरजी के सिंहासन को अलंकृत करके प्राकट्य के गीत गाये थे। बालको द्वारा मटकी फोड़ने का कार्यक्रम किया गया था। यहाँ के हरिभक्त तन-मन-धन से सेवा करके भगवान को प्रसन्न किये थे। यहाँ के को. अमृतभाई पटेल, प.भ. अरविंदभाई सेंधाभाई पटेल इत्यादि हरिभक्त बड़े उत्साही हैं। (प्रवीण उपाध्याय)

हिंमतनगर के गाँवो में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वा. की प्रेरणा से ता. ४-१०-१५ को हिंमतनगर देश के गाँवो में रहने वाले हरिभक्तों के घर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। जिस में गढोडा, खेड़, हिंमतनगर के भक्तों के घर को पावन किये थे। हिंमतनगर में प.भ. दिलीपकुमार कांतिलाल के घर विश्राम करके सभा में पधारे थे। सभी के ऊपर प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे।

प.भ. धर्मिष्ठाबहन वसंतभाई पटेल की तरफ से भोजन की व्यवस्था की गई थी। ता. १६-११-१५ लाभ पंचमी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से निर्माणाधीन नूतन मंदिर के भूमि पूजन की घोषणा की गई थी।

(रमेशभाई बी. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा २२ वाँ ज्ञानसत्र

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. माधव स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में २२ वें ज्ञान सत्र को धूमधाम से मनाया गया था।

इस २२ वें ज्ञानसत्र के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत सप्ताह के यजमान श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान प.भ. अंबालालभाई बालदास पटेल (विहारवाला) के निवास स्थान से पोथीयात्रा गाजे बाजे के साथ कथा के पूर्वदिन

सायंकाल ५-०० बजे निकल कर सायंकाल ७-०० बजे नारायणपुरा मंदिर धुन-कीर्तन करते हुए पहुंची थी । २० जितने अमदावाद मंदिर के संत पोथीयात्रा में साथ में थे । ता. ३०-८-१५ को कथा का प्रारंभ स.गु.सा. स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी के वक्तापद पर हुआ था ।

कथा में सभी उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । महिला मंडल की बहनो द्वारा घर से ही अन्नकूट बनाकर लाया गया था ।

ता. ५-९-१५ को रुक्मिणी विवाह धूमधाम से मनाया गया था । श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को रात्रि में १-०० बजे तक रास करके जन्मोत्सव मनाया गया था ।

ता. ६-९-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री दर्शन करने पधारे थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार की सेवा की प्रशंसा की थी । कथा के सातो दिन प्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गयी थी । सभा संचालन शा.कृष्णप्रसाददासजी स्वामी तथा प्रेमस्वरुप स्वामी ने किया था । अनेकधाम से संत पधारे हुये थे। श्री घनश्याम मंडल की बहनोने तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने उत्तम सेवा की थी । सात दिन तक कथा श्रवण करके भक्तों की निष्ठा में वृद्धि हुई है। (पुजारी श्रीजीचरणदास)

नारायणपुरा मंदिर में जलझीलणी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. माधव स्वामी तथा महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी की प्रेरणा से भाद्रपद शुक्ल-११ जलझीलणी एकादशी को उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। जिस के यजमान अ.नि. जसुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट परिवार के प.भ. भास्करभाई डॉ. मनोजभाई (डिट्रोईट) तथा राजदीप इत्यादि परिवार को दोपहर में १-०० बजे श्री ठाकुरजी तथा श्री गणपतिजी का विधिवत पूजन भूदेवों द्वारा कराया गया था । दोपहर में २ बजे यात्रा बड़े धूमधाम से निकली । प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से कालूपुर से पधारे हुए ठाकुरजी तथा गणपतिजी का पूजन अर्चन किया गया । नाव में जलाभिषेक किया गया । सायंकाल ६-०० बजे यात्रा पुन: मंदिर आयी और ठाकुरजी का रात्रिवास यजमान भास्करभाई ब्रह्मभट्ट के यहाँ हुआ । रात्रि में धूमधाम के साथ रास किया गया था । (को. मयूर भगत)

ईडर देश में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामी जगदीशप्रसादजी की प्रेरणा से अधिक मास में फिचोड, अरोडा, धुरावास, रतनपर, मणीयोर, साबलवाड, उगडाज, डुंगरी इत्यादि गाँवो में इडर मंदिर के अजय स्वामी श्रीजीप्रकाश स्वामी ईत्यादि संतोने कथा करके भक्तों को आनंदित किया था । यह आयोजन सत्यसंकल्प स्वामीने किया था । श्रावण मासमें भक्तों ने राजा का महल रानी तालाब हिमालय दर्शन प्रभु को झूले पर झूलते हुए दर्शन का लाभ लिया था । जन्माष्टमी उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया था। (विन्टू भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर द्वारा गाँवो में सत्संग प्रवृत्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर के महंत स्वामी धर्मप्रवर्तकदासजी एवं संत मंडल की प्रेरणा से चातुर्मास में मोखासण, लांधणज, साणंद देश के २०० गाँवो में कथा का सुंदर लाभ दिया था ।

महापूजा का भी आयोजन किया गया था । प्रत्येक गाँव में श्रीहरि की दृढ उपासना, श्री नरनारायणदेव में निष्ठा तथा धर्मकुल के प्रति महत्व बना रहे ऐसा समझाया गया था । यहाँ के मंदिर मैं जन्माष्टमी उत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

धून-भजन-कीर्तन-कथा-रास इत्यादि का कार्यक्रम किया गया । रात्रि में १२ बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती की गई । हरिभक्तों के साथ सहकार से सभी उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । अन्त में सभी प्रभु का प्रसाद पंजीरी लेकर स्वगृह प्रस्थान किये थे । महंत स्वामीने सुंदर आयोजन किया था। (को. मुकेशभाई)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर के आगामी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में संपन्न कार्यक्रम ।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री की प्रसन्नता से तथा सांख्ययोगी कमलाबहन की प्रेरणा से तथा सां.यो. कोकिलाबा, उषाबा के संकल्प से सुरेन्द्रनगर मंदिर के दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में १२५ गाँवों में सत्संग सभा का आयोजन मूली देश के सभी गाँवो में किया गया था । जिस में श्रीहरि की शुद्ध उपासना, धर्मकुल माहात्म्य, गुरु मंत्र की महिमा विषय पर बहनोने सुंदर कथा की । बहने सत्संग सभा में तथा प्रतिदिन मंदिर अपने की बात की थी । १२५ घर श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गई थी । बड़ी संख्या में बहनोने लाभ लिया था । (सां.यो. हीराबा - भक्तिमंडल)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी की प्रेरणा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है।

यहाँ पर जलझीलणी एकादशी का उत्सव, श्राद्ध पक्ष में ठाकुरजी को अलग-अलग भक्तों द्वारा भोजन का भोग लगाया गया था। यहाँ पर अमदावाद से धर्मयात्रा में पधारे हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) ने शनिवार को सत्संग सभा में पधारकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। (वसंत त्रिवेदी)

पियोरिया (आई.एस.एस.ओ.) अमेरिका चेप्टर में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा संतोकी प्रेरणा से आई.एस.एस.ओ. चेप्टर पियोरिया में प्रत्येक रविवार को सायंकाल ५-०० बजे से ८-०० बजे तक सत्संग सभा की जाती है।

२५ से २७ सितम्बर तक लुईवील से धर्मवल्लभ स्वामी के मंडल द्वारा कथावार्ता तथा हरिभक्तों के यहाँ महापूजा की गयी थी। २६ सितम्बर शनिवार सायंकाल ५ से ८ बजे तक सत्संग सभा की गयी थी। जिस में अगल बगल विस्तार के हरिभक्त सभा का लाभ लिये थे। इस तरह प्रायः सभी चेप्टरों में निष्ठावान हरिभक्त मंडल चलाते हैं। वहाँ के हरिभक्तों में संतो द्वारा श्री नरनारायणदेव की निष्ठा तथा धर्मकुल की महिमा दृढ होने की कथा की गयी थी। १५ नवम्बर रविवार को यहाँ पर अन्नकूट होगा, जिस में संतो को पधारने की वात कही गयी।

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी (अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैयाधाम पारसीपनी में रविवार को सायंकाल श्राद्ध पक्ष में शा. सत्यस्वरुप स्वामीने कथा तथा धुन-भजन हरिभक्तों के साथ किया था। स्वामीने श्राद्ध की महिमा समझाई थी। यहाँ के मंदिर के होल में प.भ. प्रहलादभाई के समधी शिकागो के श्री जयंतीभाई पटेल के अक्षरवास के निमित्त शोक सभा रखी गई थी। सभी पधारे हुए संत-हरिभक्तों के साथ मिलकर धुन की गई थी। यहाँ पर आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है। (प्रविणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में स्नेहगीता पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में शनिवार को सायंकाल ५-०० बजे से ८-०० बजे तक भुज-कच्छ के अयोध्या मंदिर में सेवा करने वाले मूलजी भगतने स.गु. निष्कुलानंद स्वामीकृत स्नेहगीता की कथा कर के सभी को आनंदित किया था। अन्त में सेवा करने वाले भक्तों का सन्मान करके श्री हनुमान चालीसा तथा श्री जनमंगल का पाठ करके ठाकुरजी की आरती उतारे थे। (प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण

नूतन वर्ष का केलेन्डर छपवाने के लिये (दाता का नाम)

सन २०१६ के सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज तथा श्री नरनारायणदेव के अलौकिक केलेन्डर में अपने धन्धा - उद्योग का नाम छपवाने के लिये नीचे के मोबाईळ नं. का संपर्क करें - २५० नंग कलेन्डर कम से कम छपाना होगा। कीमत १० रुपये में १ नंग । मोबाईल : ९८२४०३३१७५, ९९२५००७६६२, ९६६२०२१८२९,९७२५४४९२८८

श्री स्वामिनारायण मासिक के कार्य हेतु नीचे के फोन पर संपर्क करे :
मो. नं. ९०९९०९८९६९, समय प्रातः ८-०० से ५-०० बजे तक
(इस मोबाईल के अलांवा अन्य फोन-मोबाईल पर संपर्क न करें)

फलाहारी आंटा
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धर्मशाला आफिस में फलाहारी आंटा मिलेगा ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
shreeswaminarayan9@gmail.com

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

अमदावाद : प.भ. वोरा पांचाभाई देवसीभाई (उम्र ५३ वर्ष) ता. ४-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अमदावाद : प.भ. प्रवीणचंद्र रसिकलाल गांधी ता. २२-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

पीज : अमेरिका-आटलान्टा मंदिर के प्रेसि. श्री दक्षेश पटेल की काकी श्रीमती गीताबहन (करुणाबहन) ता. २५-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

अमदावाद : प.भ. मयाणी वल्लभभाई शंभुभाई (सरंभडावाला-अमदावाद कालुपुर मंदिर के भंडार में निष्काम भाव से सेवा करते हुए) ता. ३०-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

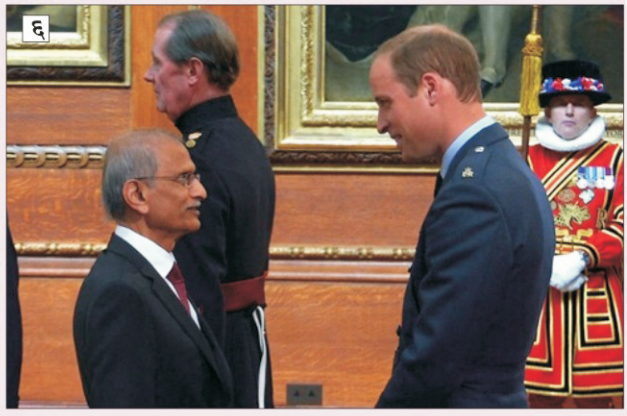

(१) अपने डिट्रोईट मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव । (२) अंजली मंदिर में कोठार आफिस का उद्घाटन करते हुए प.पू. महाराजश्री । (३) अमेरिका में आई.एस.एस.ओ. के नये चेप्टर दरहाम में सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (४) लीमडा मुवाडी गाँव में नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा में पू. पी.पी. स्वामी इत्यादि संत । (५) नारायणघाट मंदिर में शरद पूनम को ठाकुरजी की आरती उतारते हुए अमदाबाद तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी । (६) कार्डिफ में रहते हुए परम भक्त नारणभाई प्रिंसविलीयम्स - (प्रिंस चार्लस के सबसे बड़े पुत्र) ताजपोशी के समय ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) अपने आई.इस.एस.ओ. केनेडा के नूतन मंदिर एडमीन्टन में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा दर्शन का लाभ लेते हुए हरिभक्त ।(२) शिकागो मंदिर की सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) शान्ति स्वामी तथा शास्त्री यज्ञप्रकाशदासजी स्वामी (३) चराडवा में प.पू. महाराजश्री के जन्मोत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए यजमान परिवार ।

घर बैठे सत्संग लाभ

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में बिराजमान देवों का नित्य दर्शन तथा पू. आचार्य महाराजश्री का सत्संग विचरण के फोटो - विडीयो - प्रवचन - WhatsApp द्वारा घर बैठे प्राप्ति हेतु

+ ९१ ९०१९०९५२०० नंबर को अपने मोबाईल में सेव करके मिस कोल करेंगे ।

नोंट : नंबर सेव किये बिना दर्शन नहीं होगा । जो नंबर अपने वोटसप एकाउन्टमें होगा उसी नंबर पर मिसकोल करे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर में **दशाब्दी महोत्सव** ता. २२ से २७ नवम्बर-२०१५

श्री स्वामिनारायण मंदिर इल्हाबाद में **मूर्ति प्रतिष्ठा** ता. २६ से ३० नवम्बर-२०१५

श्री स्वामिनारायण मंदिर कानपुर में **मूर्ति प्रतिष्ठा** ता. २९ से १ दिसम्बर-२०१५

Praful Kharsani